देश की सुरक्षा के नाम पर वर्दी पहनाकर इंसान को हैवान बना देती है यह मशीनरी

22 जनवरी की सुबह शिकोहाबाद स्टेशन पर पांच यात्रियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा क्योंकि उन्होंने फरक्का एक्सप्रेस की उस सामान्य बोगी में चढ़ने की जुर्रत की, जिसमें भारतीय सेना के कुछ जवान पहले से सफर कर रहे थे। कहा जाता है कि यात्रियों की उस जनरल डिब्बे में सफर कर रहे फौजियों से कहासुनी हो गई और इससे गुस्साये जवानों ने छः यात्रियों को ट्रेन से नीचे फेंक दिया, जिनमें पाँच बगल वाली पटरी पर आ रही संपूर्ण क्रान्ति एक्सप्रेस के नीचे आकर मारे गये। एक व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल हो गया। यह था अन्यायी, जुल्मी पूँजीवादी व्यवस्था के एक सबसे छोटे वर्दीधारी प्यादे से आम जन के टकराने का परिणाम!

ऐसा नहीं है कि वर्दीधारी चाहे वह पुलिस के हों या फौज के, किसी बाहरी दुनिया से आते हैं। वह इसी समाज के होते हैं और उनका बड़ा हिस्सा आम जनता से आता है। फिर ऐसा क्यों होता है कि ये सिपाही-हवलदार जैसे एकदम निचले पायदान पर खड़े वर्दीधारी भी आमजन से इतना विमुख हो जाते हैं और कभी-कभी तो इनमें से कोई मानवद्वेषी अपराध तक कर बैठता है। पुलिस की वर्दी की छाया तक से आम नागरिक बचता है। भारतीय सेना देश के जिन हिस्सों में कानून व्यवस्था को बनाये रखने के नाम पर भेजी जाती है, वहाँ से उसको वापस बैरकों में भेजने की माँगें उठने लगती हैं। मणिपुर इसका ताजा उदाहरण है(जहाँ सेना के खिलाफ पनपे आक्रोश और बेबसी की चरम अभिव्यक्ति था, वहाँ की कुछ माँओं द्वारा पूर्ण निर्वस्त्र होकर किया गया वह प्रदर्शन जिसमें बैनर पर लिखा था 'भारतीय सेना आओ हमारा बलात्कार करो'।

दरअसल, सेना और पुलिस का पूँजीवादी समाज में मुख्य काम होता है मुनाफाखोरों के लुटेरे निजाम को बचाये रखना। यह काम करने वालों को नट-बोल्ट की तरह तैयार किया जाता है। यह नहीं भूलना चाहिए कि सन् 47 की तथाकथित आजादी के बाद आज भी पुलिस-फौज का वही ढाँचा बरकरार रखा गया। आज भी उसी तरह की ट्रेनिंग देकर, आम जन से काटकर इंसान को आज्ञाकारी यंत्रमानव में तब्दील कर दिया जाता है। उसे वर्दीधारी और डण्डाधारी बनाकर शासक बन जाने और राज करने का भ्रम दे दिया जाता है। जब ऊपर वाले यानी शासक वर्ग की लूट और ऐयाशियों को एक निचले स्तर का वर्दीधारी देखता और समझता है तो वह भी अपने डण्डे के कुशल प्रयोग के लिए प्रेरित होता है। और कुछ नहीं मिलता तो वह गरीब जनता पर ही रौब गालिब कर सत्ता सुख भोग लेता है। इस सबके बावजूद यह भी सच है कि पूँजीवाद द्वारा गरीब की आत्मा को कुचल डालने की लाख कोशिशों के बावजूद इंसानियत का गला नहीं घोंटा जा सकता। हरचंद प्रयास के बाद भी हर इंसान को यंत्रमानव नहीं बनाया जा सकता। कुछ लोगों के तर्क, विवेक और आत्मा को भले ही नष्ट कर दिया जाय।

शिकोहाबाद कांड के अपराधी फौजियों को सजा देने की माँग करते हुए यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि पूँजीवाद ही ऐसे अपराधियों को पैदा करता है। हमारे घरों में घुसकर हमारे बेटे-बेटियों को हमसे दूर ले जाता है, वह उनकी आत्माओं पर प्रहार करता है। इसलिए असली अपराधी की शिनाख्त भी उतनी ही जरूरी है, जितना इन घटनाओं के खिलाफ आवाज उठाना।

बेरोजगारी पर महामहिम की चिन्ता की वास्तविकता

(पेज 49 से जारी)

हैं जहाँ गाँवों की विशाल छोटी-मँझोली खेतिहर आबादी उजड़-पजड़कर शहरी औद्योगिक केन्द्रों की ओर पलायन कर रही है। पूँजीवादी विकास का लाजिमी नतीज़ा है रोजगार विहीन विकास। दूसरे शब्दों में, आज बेरोजगारी विश्व पूँजीवाद की एक लाइलाज बीमारी बन चुकी है। विश्व पूँजीवादी तंत्र के खात्मे के साथ ही इस बीमारी का खात्मा हो सकता है। दूसरा कोई उपाय नहीं है। सो महामहिम और उनकी बिरादरी की चिन्ताएँ आनेवाले दिनों में कम होने के बजाय बढ़ने ही वाली हैं।

रोजगार के बारे में शासक वर्गों के नुमाइन्दों की फर्जी चिन्ताओं और घड़ियाली आँसुओं से मेहनतकशों को कोई भ्रम पालने की जरूरत नहीं है। जब तक देश के समूचे उत्पादन तंत्र, राजकाज और समाज के पूरे ढाँचे पर मेहनतकशों का नियंत्रण नहीं कायम होगा तब तक बेरोजगारी की समस्या से निजात नहीं पायी जा सकती। जब देश में मेहनतकशों की सत्ता कायम होगी केवल तभी एक ऐसी अर्थव्यवस्था का ढाँचा खड़ा किया जा सकता है जिसमें देश में उपलब्ध विपुल श्रम एवं प्राकृतिक सम्पदा का योजनाबद्ध ढंग से नियोजन कर हर हाथ को काम दिया जा सकता है और करोड़ों नौजवानों की ऊर्जा को एक नया भारत बनाने की दिशा में लगाया जा सकता है। इस अर्थव्यवस्था में मुनाफे के लिये कोई गुंजाइश नहीं होगी। केवल समाज की जरूरतें उसके केन्द्र में होंगी।